CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

राजस्थान राज्य के दौसा शहर में संचालित मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत बालक– बालिकाओं के जीवन मूल्यों एवं समायोजन का अध्ययन

डॉ. हनुमान सहाय शर्मा
प्राचार्य , स्व. मूलचंद मीना शिक्षक
प्रशिक्षण महाविद्यालय लालसोट (दौसा) राजस्थान
Email - hanumanji064@gmail.com, *Mob.- 8005651090*

सारांश

भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है इसमे विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ निवास करते है। मिल–जुल कर रहते हैं। एक दूसरे की सभ्यता–संस्कृति एवं संस्कारो का सम्मान करते हैं। किसी भी देश के सम्पूर्ण विकास हेतु जनता का शिक्षित होना बहुत आवश्यक है । भारत की जनसंख्या का एक बडा हिस्सा मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों का भी है। विकसित भारत की संकल्पना तभी साकार हो सकती है जब मुसलमानों की कमजोर शैक्षिक स्थिति में सुधार हो। भारत में विकास के पर्याप्त अवसर तभी उपलब्ध होंगे जब भारतीय समाज में हिन्दू और मुस्लिम दोनों शिक्षित होंगे। हिन्दूओं के सभी बच्चे सामान्य विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते है परन्तु मुस्लिम बच्चे अधिकतर मदरसों में तालीम ले रहे है। मकतब और मदरसे मुस्लिम समुदाय की धार्मिक शिक्षा के परम्परागत केन्द्र रहे है। भारतीय संविधान में देश के हर 6–14 वर्ष की आयु के बच्चे को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की बात कही गई है और इस हेतु शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, 1 अप्रैल 2010 से लागू भी हो गया है। इसके परिणामस्वरूप मुस्लिम समुदाय का शैक्षिक एवं आर्थिक पिछड़ापन दूर करने हेतु समाज एवं सरकार के स्तर पर प्रयास प्रारम्भ हुए हैं। और सरकार की दृढ़ इच्छा एवं प्रतिबद्धता के फलस्वरूप मदरसों में दीनी तालीम के साथ–साथ बुनियादी तालीम की व्यवस्था भी की गयी है।

मुख्य शब्द : *मदरसे ,सामान्य विद्यालय,जीवन मूल्य, समायोजन आदि.*

भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है इसमे विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ निवास करते है। मिल–जुल कर रहते हैं। एक दूसरे की सभ्यता–संस्कृति एवं संस्कारो का सम्मान करते हैं। किसी भी देश के सम्पूर्ण विकास हेतु जनता का शिक्षित होना बहुत आवश्यक है । भारत की जनसंख्या का एक बडा हिस्सा मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों का भी है । विकसित भारत की संकल्पना तभी साकार हो सकती है जब मुसलमानों की कमजोर शैक्षिक स्थिति में सुधार हो ।भारत में विकास के पर्याप्त अवसर तभी उपलब्ध होंगे जब भारतीय समाज में हिन्दू और मुस्लिम दोनों शिक्षित होंगे। हिन्दूओं के सभी बच्चे सामान्य विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते है परन्तु मुस्लिम बच्चे अधिकतर मदरसों में तालीम ले रहे है। मकतब और मदरसे मुस्लिम समुदाय की धार्मिक शिक्षा के परम्परागत केन्द्र रहे है ।भारतीय संविधान में देश के हर 6–14 वर्ष की आयु के बच्चे को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की बात कही गई है और इस हेतु शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 ,1 अप्रैल 2010 से लागू भी हो गया है। इसके परिणामस्वरूप मुस्लिम समुदाय का शैक्षिक एवं आर्थिक पिछड़ापन दूर करने हेतु समाज एवं सरकार के स्तर पर प्रयास प्रारम्भ हुए हैं। और सरकार की दृढ़ इच्छा एवं प्रतिबद्धता के फलस्वरूप मदरसों में दीनी तालीम के साथ–साथ बुनियादी तालीम की व्यवस्था भी की गयी है।

1995 में राजस्थान में लोक जुम्विश परियोजना के तहत मेवात क्षेत्र के कामा विकास खंड में सर्वप्रथम मदरसा शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मदरसा बोर्ड का गठन राजस्थान में जनवरी 2003 में किया गया। राजस्थान में वर्तमान में लगभग 3232 मदरसे संचालित है । एक आकलन के मुताबिक लगभग 3.00 लाख मुस्लिम बच्चे इन मदरसों में दिनी तालीम के साथ बुनियादी तालीम ,हिंदी ,अंग्रेजी , गणित ,विज्ञान , सामाजिक – विज्ञान विषयों की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मदरसा शिक्षा का कार्यक्रम राजस्थान बोर्ड़ ऑफ मुस्लिम वर्कर्स के माध्यम से वर्ष 1999–2000 से शुरू किया गया।

वर्तमान राजस्थान में अब तक 3240 मदरसों का पंजीकरण किया जा चुका है तथा पंजीकरण प्रक्रिया निरंतर जारी है ।प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा द्वारा बालकों की अंतर्निहित शक्तियों को उद्‌गारित किया जाता है। इस स्तर की शिक्षा द्वारा उन्हें आदर्शो एवं मूल्यों की शिक्षा ही नहीं दी जाती अपितु उन्हें समायोजन करने के योग्य भी बनाया जाता हैं।

राजस्थान मदरसा बोर्ड ने 12 वीं कक्षा तक मदरसे संचालित करने हेतु राजस्थान सरकार को प्रस्ताव भेजा हुआ है।

समस्या कथन

राजस्थान राज्य के दौसा शहर में संचालित मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत बालक–बालिकाओ के जीवन मूल्यों एवं समायोजन का अध्ययन "

अध्ययन के उद्देश्य

1. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के जीवन मूल्यों का अध्ययन करना।
2. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना ।
3. सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के जीवन मूल्यों का अध्ययन करना।
4. सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना।
5. मदरसों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के जीवन मूल्यों का अध्ययन करना।
6. मदरसों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों के जीवन–मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
5. सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नही होता है।
6. सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
7. मदरसों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
8. मदरसों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। जिसे नार्मेटिव,डिस्क्रेप्टिव,सर्वे स्टेट्स ट्रेन्डस् आदि नामों से जाना जाता है। इसका सम्बन्ध वर्तमान में चल रही प्रक्रिया एवं उससे सम्बंधित कार्यों के अध्ययन से होता है।

शोध में प्रस्तुत न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के तौर पर कुल 80 विद्यार्थियों का चयन किया गया है । जिसमें सामान्य विद्यालयों से 40 विद्यार्थी (20 बालक एवं 20 बालिकाएँ) तथा मदरसों से 40 विद्यार्थी (20 बालक एवं 20 बालिकाएँ) सम्मिलित है ।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

1. जीवन मूल्यों के मापन हेतु डॉ. यशवीर सिंह द्वारा निर्मित "Brif Scale of Value Test" का प्रयोग किया गया है।
2. समायोजन के मापन के लिए डॉ. ललित शर्मा द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

1. मध्यमान

2. प्रामाणिक विचलन

3. टी–परीक्षण

शोध का परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन को राजस्थान के दौसा शहर में संचालित मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों में पढ़ने वाले उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया है ।

तथ्यों का प्रस्तुतीकरण,विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना	समूह	क्षेत्र	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	टी–मूल्य (t)	स्वीकृत/अस्वीकृत
परिकल्पना–1 'जीवन मूल्य'	बालक	मदरसा सामान्य विद्यालय	20 20	63.2 60.8	11.72 9.92	0.583	स्वीकृत
परिकल्पना–2 'जीवन मूल्य'	बालिका	मदरसा सामान्य विद्यालय	20 20	61.25 59.4	10.97 10.65	0.542	स्वीकृत
परिकल्पना–3 'समायोजन'	बालक	मदरसा सामान्य विद्यालय	20 20	30.85 31.80	3.23 2.55	1.03	स्वीकृत
परिकल्पना–4 'समायोजन'	बालिका	मदरसा सामान्य विद्यालय	20 20	30.45 32.25	2.24 2.27	2.54	स्वीकृत
परिकल्पना–5 'जीवन मूल्य'	बालक बालिका	सामान्य विद्यालय सामान्य विद्यालय	20 20	32.35 31.95	2.06 2.33	0.57	स्वीकृत
परिकल्पना–6 'समायोजन'	बालक बालिका	सामान्य विद्यालय सामान्य विद्यालय	20 20	30.20 30.85	2.53 2.23	0.87	स्वीकृत
परिकल्पना–7 'जीवन मूल्य'	बालक बालिका	मदरसा मदरसा	20 20	37.00 36.00	2.03 2.94	1.25	स्वीकृत
परिकल्पना–8 'समायोजन	बालक बालिका	मदरसा मदरसा	20 20	37.20 35.80	2.40 2.55	1.79	स्वीकृत

df = 38 पर

सार्थकता स्तर का मान –

0.05 पर t का मान – 2.02

0.01 पर t का मान – 2.71

शोध के निष्कर्ष

1. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों के बालकों के जीवन मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों की बालिकाओं के जीवन मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता है।
3. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों के बालकों के समायोजन में कोई अन्तर नहीं होता है।
4. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों की बालिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं होता है।
5. सामान्य विद्यालयों के बालक व बालिकाओं के जीवन मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता है।
6. सामान्य विद्यालयों के बालक–बालिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं होता है।
7. मदरसों में पढ़ने वाले बालक–बालिकाओं के जीवन मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता है।
8. मदरसों में पढ़ने वाले बालक–बालिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं होता है।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध का भविष्य में निम्न प्रकार से विस्तार किया जा सकता है–

1. शोध का न्यादर्श बढ़ाकर इससे वृहत् परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।
2. किसी अन्य जिले के मदरसों व सामान्य विद्यालयों का संभाग व राज्य स्तर पर भी इस प्रकार का शोध किया जा सकता है।
3. माध्यमिक, उच्च माध्यमिक या उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों पर भी इस प्रकार का शोध कार्य किया जा सकता है।
4. सभी संकाय के विद्यार्थियों पर भी इस प्रकार का शोध किया जा सकता है।
5. विद्यार्थियों के अलावा शिक्षकों पर भी इस प्रकार का शोध किया जा सकता है।
6. राजीव गाँधी पाठशाला, नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय, विवेकानन्द मॉडल स्कूल, महात्मा गांधी विद्यालय आादि पर भी यह शोध कार्य हो सकता है।
7. जीवन मूल्य, समायोजन के साथ अन्य–चरों का भी अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- भार्गव, महेशचन्द्र (1984) : "आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन" हर प्रसाद भार्गव, आगरा
- भटनागर, सुरेश : "शिक्षण अधिगम विकास का मनोविज्ञान" सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
- Buch , M.B. 1983–88 :"Fourth survey of research in education" Baroda , m.s. university.
- डॉ. मदान, आदर्श : "जनरल ऑफ एज्यूकेशन" एशियन पब्लिकेशन हाऊस, बॉम्बे
- डॉ. श्रीवास्तव, डी.एन. : "सांख्यिकी एवं मापन" अग्रवाल पब्लिकेशन हाऊस, बॉम्बे
- डॉ. श्रीवास्तव, डी. एन. : "अनुसंधान विधियाँ" साहित्य प्रकाशन, आगरा
- गेरिट, हेनरी, ई. (1996): "शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग" कल्याणजी पब्लिशर्स, लुधियाना
- जयसवाल, संगीता: "राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान सम्प्राप्तियाँ, एवं संभावनाएँ"
- कपिल, डॉ. एच. के. : "अनुसंधान विधियाँ" हरप्रसाद भार्गव, आगरा
- कपिल डॉ. एच. के. : ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' –विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- नागर, कैलाशनाथ: "सांख्यिकी के मूल तत्व"मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ
- राय, पारसनाथ : "अनुसंधान परिचय" सम्प्रत्यय संस्करण 1996,लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा–3
- सुखिया, एस. पी. मेहरोत्रा, आर. एन. (1984) : "शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2